गायत्रीतीर्थ
शान्तिकुञ्ज
www.awgp.org

बाल संस्कारशाला

सांस्कृतिक और मूल्य विकास के लिए 6 से 13 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए एक पाठ्यक्रम

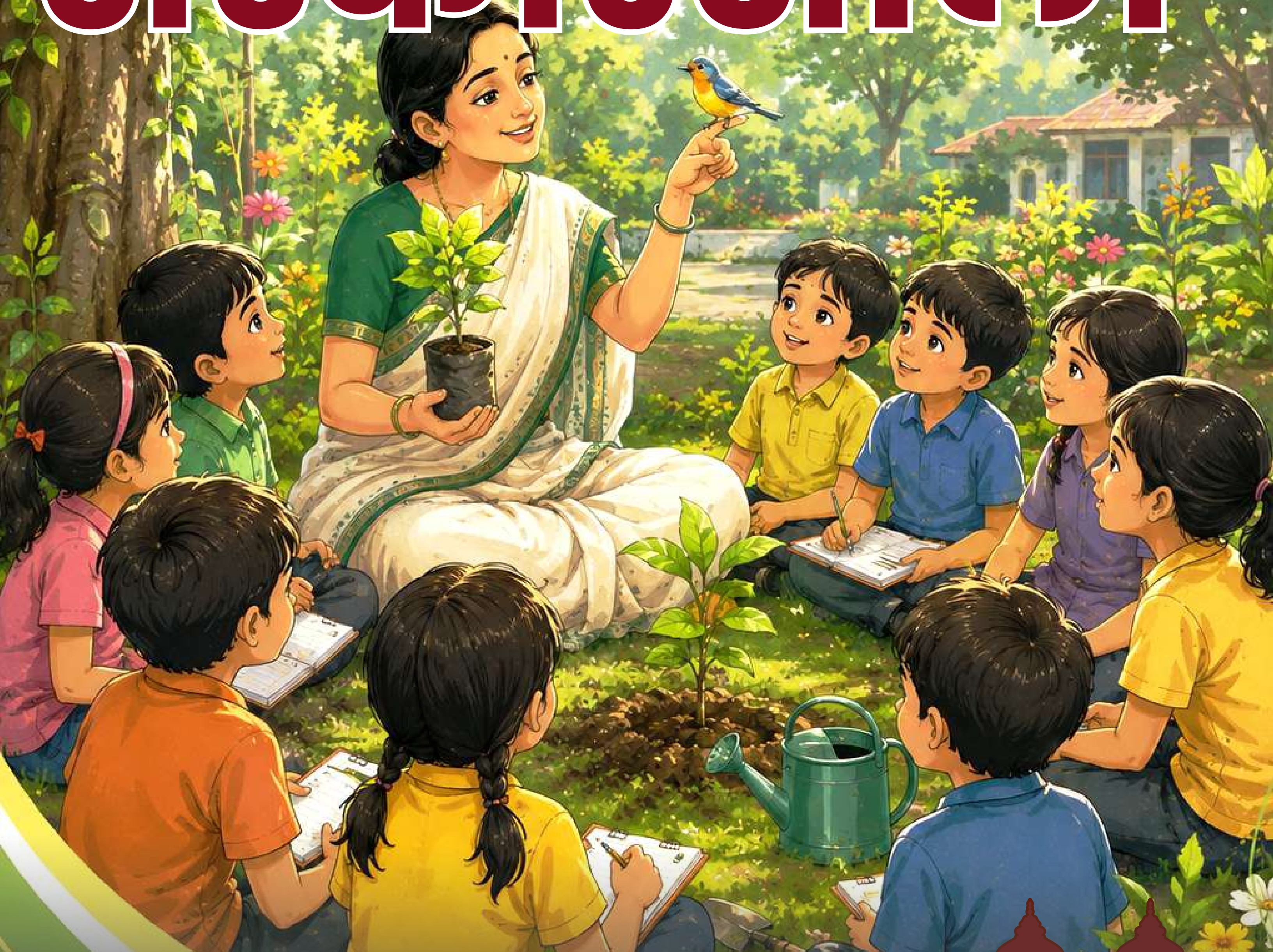

9258360962 9258360652 youthcell@awgp.org

युवा प्रकोष्ठ - अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार

गायत्रीतीर्थ
शान्तिकुञ्ज
www.awgp.org

वृक्षारोपण

विषय सूची

प्रथम काल खंड	1.दीप प्रज्ज्वलन 2.वंदना 3.प्रार्थना
द्वितीय काल खंड	1.सद्वाक्य मनन चिन्तन 2.प्रेरणाप्रद कहानी - वृक्ष और भगवान शंकर 3.दृष्टांत - जादव मोलाई पयंग
तृतीय काल खंड	1.भाव भरा गीत - पर्यावरण बचाओ ! धरती 2.जीवन जीने की कला-पेड़ हमारे जीवन रक्षक मित्र
चतुर्थ काल खंड	1.योगाभ्यास – सूक्ष्म व्यायाम 2.पेड़ हमारे जीवन रक्षक मित्र 3.शिष्टाचार /जयंती / जन्मदिन संस्कार / पर्व संदेश / क्राफ्ट / चित्रकला / पर्व आयोजन, आदि का आयोजन

अंत में

सत्संकल्प पाठ, जय घोष, शांतिपाठ

प्रथम कालखण्ड

कक्षा के सबसे छोटे बच्चे से दीप प्रज्ज्वलन कराएं। यदि आचार्य सहजता से मंत्र उच्चारण कर सकें, तो मंत्रोच्चारण के साथ दीप प्रज्ज्वलन कराया जा सकता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

भावार्थ - उस प्राणस्वरूप दुःखनाशक, सुख स्वरूप श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अपने अंतःकरण में धारण करें, वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें ।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।

ॐ अग्ने नय सुपथा राये, अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो, भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम।

देव पूजन

देवमंच पर गुरुदेव, माता गायत्री का पूजन

गुरुवंदना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुरेव महेश्वर:, गुरु:साक्षत् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम: ||1||
अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्, तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नम: ||2||
मातृवत् लालयित्री च पितृवत् मार्गदर्शिका, नमोऽस्तु गुरु सत्तायै श्रद्धा प्रज्ञा युता च या ॥

वेदमाता देवमाता विश्वमाता की वन्दना

ॐ आयातु वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनी, गायत्रिच्छन्दसां मात: ब्रह्मयोने नमोऽस्तुते।
ॐ स्तुता मया वरदा वेदमाता, प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम आयु: प्राणं प्रजां पशु,
कीर्ति द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।

प्रार्थना

- आओ बच्चों अब हम सब मिलकर अब प्रार्थना करते है कि हम सब अच्छे बच्चे बनेंगे और ईश्वर इसके लिये हमें शक्ति प्रदान करें।
- यदि संस्कार शाला में अन्य धर्म-सम्प्रदाय के बच्चे हैं, तो सर्वधर्म प्रार्थना कराएं।

पद्यानुवाद

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्तव्य मार्ग पर डट जायें।
परसेवा, परउपकार में हम, निज जीवन सफल बना जायें।
हम दीन-दुःखी, निबलों, विकलों, के सेवक बन संताप हरें।
जो हों भूले, भटके, बिछुड़े, उनको तारें, खुद तर जायें। वह शक्ति.......
छल-द्वेष- दम्भ, पाखण्ड झूठ, अन्याय से निश दिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम, सुधा रस बरसायें। वह शक्ति.....
निज आन-मान, मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे, अभिमान रहे,
जिस देवभूमि में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जायें। वह शक्ति......

- आचार्य बच्चों को नीचे दिए प्रथम पद का अनुवाद व भावार्थ समझाएं । जैसे –

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्तव्य मार्ग पर डट जायें।
परसेवा, परउपकार में हम, निज जीवन सफल बना जायें।

1. · प्रार्थना क्या है ?
2. · हम किससे कर रहे हैं ?
3. · और क्या प्रार्थना कर रहे हैं ?

जप और ध्यान निर्देश सहित-

- आचार्य बच्चों को निर्देश दें :-

1- सभी बच्चें पद्मासन/सुखासन में बैठें ।

2- दोनों हाथों गोद में रखें (बायीं हथेली हाथ नीचे, दाहिनी ऊपर) नेत्र बंद, कमर सीधी ।

3- बीच में कोई आखें नहीं खोलेंगे, किसी को स्पर्श नहीं करेंगे । कोई हंसी ठिठोली नहीं करेंगे । शांत बैठेंगे तथा यहाँ से जैसा कहा जाए वैसा ही आप सभी करते जाएं ।

जप एवं ध्यान निर्देश सहित-

लम्बी गहरी श्वास भरकर ओंकार उच्चारण हमारे साथ- साथ करें , आगे-पीछे नहीं।

अब एक साथ मंत्र- ओ३म् भूर्भुवः स्वः....... प्रचोदयात् (3 बार)

ओंऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ

शान्त .... शरीर शाऽऽऽन्त .... शरीर में कोई हलचल नहीं .... कमर सीधी .... ध्यान मुद्रा............. ध्यान के लिए तैयार.................... अपना पूरा ध्यान हमारे निर्देशों पर रखें, हम जो कह रहे हैं वह सुनें, वैसी ही भावना करें............... पूरा ध्यान हमारे निर्देशों पर रखें.............शांत.......... स्थिर शरीर....................हमारा मन शान्त हो रहा है........... अब महसूस करें कि श्वांस अंदर आ रही है............... श्वांस बाहर जा रही है.............. अपना ध्यान श्वांसों पर रखें................देखें श्वांस अंदर आ रही है..............पुनः.................. श्वांस बाहर जा रही है............. अब अपना ध्यान श्वांसों से हटाकर भृकुटि मध्य, ललाट मध्य पर ले जाएं, जहां हम तिलक लगाते हैं............... भावना करें.................. हमें भगवान सूर्य दिखाई दे रहे हैं................ उगता हुआ लाल सूर्य................. सूर्य की तेजस्वी किरणों से हम स्वस्थ हो रहे हैं................. बुध्दिमान बन रहे .... हम संस्कारवान, विनम्र बन रहे हैं .... सूर्य के तेजस्वी किरणों के प्रभाव से .... हमारे सब दोष दुर्गुण दूर हो रहे हैं .... सभी बुरी आदतें दूर हो रही हैं..................... हम निर्मल पवित्र बन रहे हैं ....!

अब हमारे साथ दुहराते चलें :-

ॐ असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय । मृत्योर्मा अमृतंगमय । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः!

दोनों हाथों को आपस मे रगड़े और चेहरे तथा आँखों पर लगाए ।

धीरे-धीरे नेत्र खोलें ।

शुभकामना

- आचार्य बच्चों को निर्देश दें :-

सभी बच्चे हथेली पसारकर भगवान से सब के लिए सदबुद्धि, सबके कल्याण की मांग करने का भाव बनाएं मन्त्रोच्चारण को दुहराएं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्।

भावार्थ - हे प्रभो ! विश्व के समस्त प्राणी सुखी हों, सभी निरोगी हो, सभी शुभ एवं कल्याणमय (सकारात्मक) देखें, कभी किसी को कोई पीड़ा एवं दुःख न हो।

व्याख्या

हथेलियों के दर्शन का मूल भाव यही है कि हम अपने कर्म पर विश्वास रखें। ईश्वर से हम प्रार्थना करते हैं कि ऐसे कर्म करने की प्रेरणा दें, जिससे जीवन मे धन, समृद्धि, ज्ञान और शुख शान्ति प्राप्त कर सकें। हमारे हाथों से कोई बुरा कार्य न हो और दूसरों की मदद के लिए हमेशा हाँथ बढ़ाते रहें।

द्वितीय कालखण्ड

सद्वाक्य / दोहा / सूक्तियां मनन चिंतन

आचार्य पहले से ही ब्लैक बोर्ड पर पूर्व निर्धारित सदवाक्य को लिखकर रखें।

तरु सा मित्र नहीं है भाई जन्म मरण का यह हमराही

प्रेरणाप्रद कहानी

वृक्ष और भगवान शंकर

पुत्र ने पिता से पूछा- वृक्ष को शंकर भगवान की उपमा क्यों दी जाती है पिताजी ? पिता ने कहा- बेटा समुद्रमंथन हुआ तो उसमें से विष भी निकला, जब उसे किसी ने ग्रहण नहीं किया, तो शंकर जी ने पीकर मानवता की रक्षा की। शंकर जी ने तो ऐसा एक बार ही किया, पर धरती के जितने भी जीवधारी अपनी गंदी साँस का जहर निकालते हैं, बेचारे वृक्ष उसे पीकर बदले में स्वच्छ ऑक्सीजन देते हैं। जिससे उनका जीवन सुरक्षित बना रहता है। पुत्र बोला- फिर तो वृक्ष महाशंकर हुए पिताजी ।

महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग

जादव मोलाई पयंग

जादव १६ वर्ष का थे जब असम में बाढ़ ने तबाही मचाई थी । उन्होंने देखा कि जंगल और नदी किनारों के इलाकों में आने वाले प्रवासी पक्षियों की गिनती धीरे-धीरे कम हो रही है, घर के आसपास दिखने वाले सांप भी गायब हो रहे हैं । इस कारण वह बेचैन हो उठे ।

जब उन्होंने अपने बड़े लोगों से पूछा, कि उन साँपों की तरह अगर हम सब भी मरने लगेंगे तो हम क्या करेंगे? सभी हसी-मज़ाक में बात को उड़ा देते । उन्हे समझ आया कि मुझे ही कुछ करना पड़ेगा ।

ग्राँव के बड़े बुज़ुर्गों ने बताया कि जंगल उजड़ने और पेड़ों की कटाई के कारण पशु-पक्षियों का बसेरा खत्म हो रहा है, और इसका उपाय यही है कि उन प्राणियों के लिए नये आवास स्थान या जंगल का निर्माण किया जाए ।

जब उन्होंने वन-विभाग को चेताया, तो उन्होंने उनसे कहा कि वह खुद ही पेड़ लगाए । तब उन्होंने ब्रह्मपुत्र नदी के तट के पास के एक वीरान द्वीप को चुना और वहाँ वृक्षारोपण का कार्य शुरु कर दिया । तीन दशकों से पयंग प्रतिदिन उस टापू पर जाते और कुछ नये पोधों को रोपण कर आते ।

पौधों को पानी देने की एक बड़ी समस्या खड़ी हुई । नदी से -

पानी उठा-उठा कर उगते हुए सभी पौधों को पानी वे नहीं दे सकते थे । इलाका इतना बड़ा था कि यह काम किसी अकेले के बस में न था ।

पयंग ने इसका उपाय कुछ इस तरह किया - उसने बाँस की एक चौखट हर पौधे के ऊपर खड़ी की और उसके ऊपर घड़ा रखा जिसमें छोटे छोटे सुराख थे । घड़े का पानी धीरे-धीरे नीचे टपक कर पौधों को सींचता, हफ़्ते भर तक, जब तक वो खाली न हो जाता ।

१९८० में, जब गोलाघाट ज़िले के वन विभाग ने जनकल्याण उपक्रम के अन्तर्गत वृक्षारोपण कार्य जोरहाट ज़िले से ५ किमी दूर अरुणा चापोरी इलाके के २०० हेक्टेयर में शुरु किया तो पयंग वहां जुड़ गए ।

पाँच साल चले उस अभियान में पयंग ने बतौर श्रमिक वहां काम किया । अभियान की समाप्ति के बाद जब अन्य श्रमिक चले गये तब पयंग ने वहीं रुकने का निर्णय लिया । अपने बल बूते पर वह पौधों की देखरेख करते और साथ ही नये पौधों को भी लगाते । इसका परिणाम यह हुआ कि वह इलाका अब एक घने जंगल में रूपांतरित हो गया है ।

पयंग भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम के 'मीशिंग' आदिवासी जनजाति के सदस्य है । वह अपनी पत्नी और ३ बच्चों के साथ जंगल में एक झोंपड़ी में रहते है । उसके बाड़े में गायें और भैंसें हैं जिनका दूध बेचकर वह अपनी रोज़ी-रोटी चलाते हैं, यह उनके परिवार की आय का एकमात्र साधन है ।

उनका कहना है – "मेरे साथी इंजीनियर बन गये हैं और शहर जा कर बस गये हैं, मैंने सब कुछ छोड़ इस जंगल को अपना घर बनाया है। अब तक मिले विभिन्न सम्मान और पुरस्कार ही मेरी असली कमाई है, जिससे मैं अपने को इस दुनिया का सबसे सुखी इंसान महसूस करता हूँ।"

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग ने २२ अप्रेल २०१२ को पयंग को उनकी अतुलनीय उपलब्धि के लिए सार्वजनिक सभा में सम्मानित किया । ज.ने.वि. के उप-कुलपति सुधीर कुमार सोपोरी ने जादव पयंग को "फॉरेस्ट मॅन ऑफ इंडिया" (भारत का वन नायक) की उपाधि प्रदान की ।

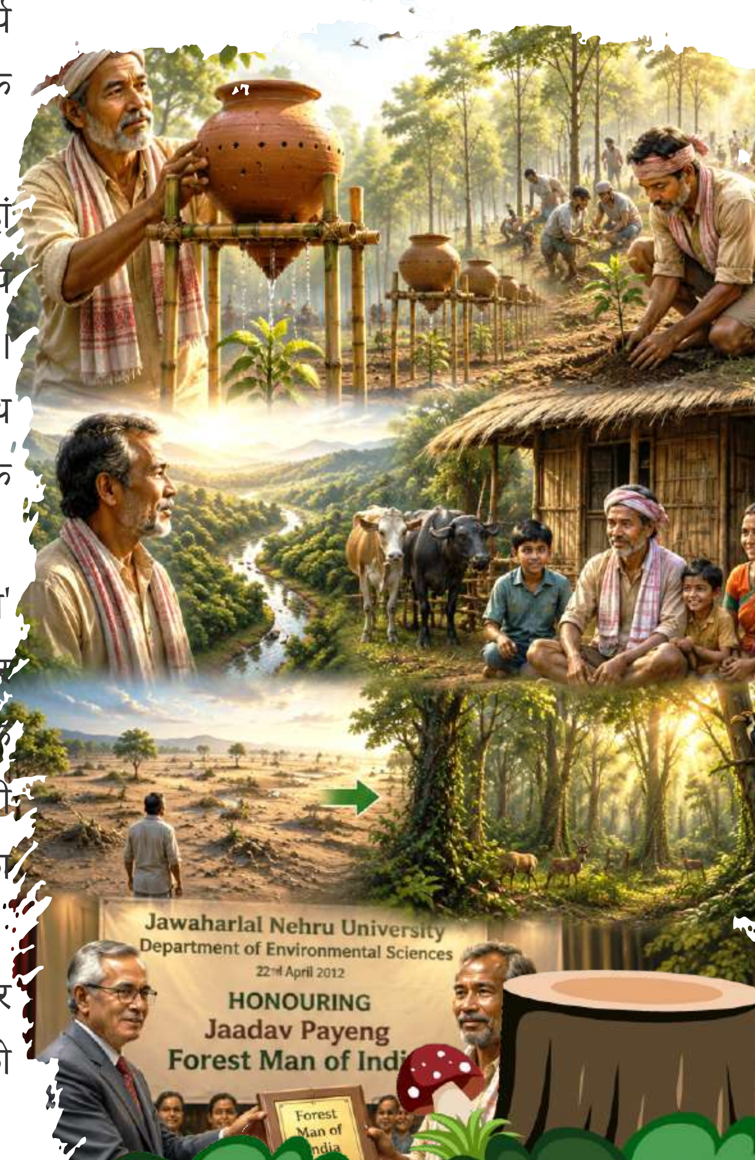

लघु अवकाश
5 मिनट

तृतीय कालखण्ड

प्रज्ञागीत

(समयानुसार - सप्ताह मे एक-एक अंतरा बच्चों से गवाकर याद कराएं)

बच्चों को पुनः व्यवस्थित बैठने का निर्देश दें व गीत हेतु सबसे तालबद्ध ताली बजवाएं। ढपली का प्रयोग न कर ताली का अभ्यास कराएं। वही गीत ले जिसका पूर्व अभ्यास हो।

आचार्य बालकों को निर्देश दें-

1. सभी बच्चे गीत की पंक्तियां दोहराएं ।
2. स्वर सामान्य रखें, कोई ऊंचा नीचा नहीं बोलें ।
3. अन्य कोई बात नहीं करें, पूरा ध्यान गीत पर रखे ।

पर्यावरण बचाओ! धरती

पर्यावरण बचाओ! धरती चिल्ला रही हमारी।
क्या विनाश की कर ही डाली, है तुमने तैयारी॥

जल- जीवन में निर्मलता का, नामोंनिशां न बाकी।
साँसों में अब जहर घोलती, प्राणवायु वसुधा की।
मिट्टी की सोंधी सुगन्ध भी, रसायनों की मारी॥

कटते वृक्ष चीखते जाते, अरे मूर्ख इन्सानों।
क्या विकास है क्या विनाश है, इतना तो पहचानों।
सूखा बाढ़ अकाल सभी, करनी का फल है भारी॥

मुक्तक-

पर्यावरण हमारी धरती की सुन्दरतम् थाती है।
इसे बचायें हम सब मिलकर, यही दीप की बाती है॥

YouTube
shantikunjvideo

जीवन विद्या-पेड़ हमारे जीवन रक्षक मित्र

आचार्य पेड़ के महत्व के बारे में बच्चों को बताएं

दश कूप समो वापी दशवापी समो ह्रदः ।
दश ह्रद समः पुत्रः दशपुत्र समो द्रुमः ॥

भावार्थ : दस कुओं के समान एक वापी होती हैं। दस वापियों के समान एक सरोवर होता है। दस सरोवरों के समान एक पुत्र का महत्व है । इसी प्रकार दस पुत्रों के समान एक वृक्ष लगाना पुण्यदायी होता है।

1. पेड़ ग्रीनहाउस इफैक्ट से संरक्षित रखते हैं। पेड़ प्रदूषण कारक तत्त्वों यथा - NO_2, SO_2, O_3, NH_3, (अमोनिया) एवं कार्बन डायऑक्साइड (CO_2) का अवशोषण करते हैं। एक एकड़ भूमि पर अवस्थित पेड़ प्रति वर्ष 62,000 मील कार चलाने से उत्पन्न CO_2 को अवशोषित करते हैं। और 18 मनुष्यों के लिये आवश्यक पर्याप्त ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।
2. पेड़ हमारे घरों, गलियों एवं शहर-ग्राम में तापमान को सन्तुलित बनाये रखते हैं। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि पर्याप्त पेड़ हमारे शहर के तापमान को प्रायः 10 डिग्री फोरेनहाइट तक कम कर देते हैं।
3. पेड़ ऊर्जा की भी बचत करते हैं। AC एयर कण्डीशनिंग में जो ऊर्जा व्यय होती है, पेड़ लगाने से वह ऊर्जा 50 प्रतिशत तक कम हो सकती है; क्योंकि पेड़ कार्बन डायऑक्साइड और अन्य प्रदूषक तत्त्वों को भी कम कर देते हैं।
4. यह अल्ट्रावॉयलेट किरणों से हमारी रक्षा करते हैं, जो स्किन कैंसर का कारण हैं।
5. पेड़ों से हमारे भोजन की पूर्ति भी होती है, फलदार पेड़ न केवल मनुष्यों के लिए, बल्कि पक्षियों एवं वन्य जीवों आदि के लिए भी भोजन आहार उपलब्ध कराते हैं।
6. औषधि, फल-फूल, ईंधन एवं फर्नीचर के लिए लकड़ी आदि प्रदान कर वृक्ष हमारी आर्थिक समृद्धि बढ़ाने में सहायक हैं।
7. वृक्ष हमारी हर अवस्था में, हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। अतः ये सदैव देते रहने वाले बड़े उदार मित्र एवं शिक्षक हैं।
8. पेड़ हमें एकता और समानता का संदेश देते हैं। वे बिना किसी भेदभाव के सभी को फल, छाया और आश्रय प्रदान करते हैं, यहाँ तक कि उन्हें काटने वाले को भी।
9. हम पेड़ों के बिना अपने अस्तित्व के विषय में सोच भी नहीं सकते। पेड़ों से ही शरीर रक्षा, भोजन, स्वास्थ्य, शुद्ध वायु, आदि सब कुछ मिलता है।

बालक क्या करें ?

तरुमित्र बनाएं

तरुमित्र क्या है ?

किसी पौधे को गोद लेकर उसका रोपण करना तथा मित्र की तरह उसका ध्यान रखना, अर्थात खाद पानी और सुरक्षा की व्यवस्था करना यही है तरु मित्र बनाना ।

खोजें वृक्षारोपण के अवसर

1. अपने जन्मदिन पर ।
2. अपने पूर्वजों की स्मृति में।
3. किसी महत्त्वपूर्ण अवसर, पर्व-त्यौहार पर । जैसे रक्षा बंधन पर्व , हरियाली (तीज) महोत्सव पर।
4. नये भवन, परिसर के शुभारम्भ पर।
5. महाविद्यालयों/विद्यालयों में प्रवेश पर ज्ञान दीक्षा के अवसर पर।
6. स्कूलों में बच्चों को जागरूक कर उनमें यह भाव भरें कि पेड़ों में भी जीवन है और उन्हें काटने से पीड़ा होती है। जागरूक बच्चे परिवार को भी पेड़ बचाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं ।
7. अपने गुरु व इष्ट को श्रद्धाञ्जलि स्वरूप वृक्ष लगायें।
8. घरों में वास्तु के अनुसार वृक्ष लगायें, वास्तु वाटिका बनायें। बाल वाटिका लगाएं।
9. विद्यालयों में तरुमित्र योजना चलायें। Eco Club के सहयोग से तरुमित्र बनाकर उनसे वृक्ष के रक्षण एवं पालन का संकल्प कराकर रोपण करायें।
10. यज्ञों, कथाओं में, संस्कारों के आयोजन में प्रसाद रूप में पेड़े के साथ-साथ पेड़ भी बाँटें।
11. अपना कीमती समय निकालकर पेड़ लगाने में नित्य-नियमित थोड़ा थोड़ा पुरुषार्थ करते रहें ।
12. स्वयंसेवक अपने संगठन तैयार कर वृक्ष गंगा अभियान में विशेष समय, की पुरुषार्थ लगायें।
13. तरु को अपना मित्र बना कर, पुत्र के रूप में गोद लेकर संस्था का सदस्य बनाकर (तरु मित्र, तरु पुत्र, तरु सदस्य) रोपण करें।
14. अपने नक्षत्र का वृक्ष लगायें।
15. गाँव के देव स्थान को जाग्रत करें और त्रिवेणी (पीपल, बरगद, नीम), हरिशंकरी (पीपल, बरगद, पाकड़), पंचवटी (पीपल, बरगद, अशोक, बेल, जामुन) की स्थापना करें।
16. नदियों को वृक्षों की हरी चूनर चढ़ायें, तटों पर औषधीय, धार्मिक एवं पर्यावरण महत्त्व के पौधे लगायें ।
17. पहाड़ियों, टेकरियों को गोद लेकर हरा-भरा बनायें।
18. कृषकों के खेतों की मेढ़ पर पेड़ लगवायें।
19. मन्दिर और गाँव में नक्षत्र वाटिका, राशि वाटिका, नवग्रह वाटिका, वास्तु वाटिका की स्थापना करें।
20. गाँव-गाँव में तरुपुत्र यज्ञ करायें। वृक्ष को पुत्र रूप में स्वीकार करायें, रोपण एवं पालन का संकल्प करायें।

माता-पिता क्या करें ?

1. बच्चे को पेंड लगाने के लिए प्रोत्साहित करें
2. बच्चों को पौधे, पॉलीबाग, खुरपी, खाद आदि की व्यवस्था बना दें
3. बच्चों को प्रतिदिन पौधों को खाद पानी देने के लिए प्रेरित करते रहें

चतुर्थ कालखण्ड

खेल, योग, जन्मदिन, जयंती, पर्व आयोजन आदि

1. (Outdoor Activity में योग(५ min) और खेल नियमित रखें बाकी पर्व, जन्म-जयंती आदि बदलकर अवश्यतानुसार कराते रहें। अंत में सतसंकल्प, जयघोष, शांतिपाठ कर समापन करें)

योगाभ्यास

मनोरंजक खेल / क्राफ्ट / चित्रकला

बाल वाटिका भ्रमण

पिछले सप्ताह बाल वाटिका जिन बच्चों ने बनाई उनके वाटिका को सभी बच्चों को दिखा आयें और उस बच्चे ने कैसे यावस्था बनाई इसपर प्रसनोत्तरी के माध्यम से सभी बच्चों को प्रेरित करें ।

अन्य बच्चे जिन्होंने अभी तक वाटिका नहीं बनाई वह अपने साथी से सीख ऐसा करने का प्रयास करें ।

शांतिपाठ

- सभी विद्यार्थी दोनों हाथ गोदी में रखकर बैठे। नेत्र बंद करें। हमारे भीतर, बाहर, सर्वत्र शांति हो इस भव १ के साथ भगवान से प्रार्थना करें। आचार्य के पीछे पीछे मन्त्र को दुहराएं।

ॐ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिः विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। ॐ शान्तिः शान्तिः!! शान्तिः!!!

जयघोष

कक्षा समाप्त होने पर उत्साह पूर्वक शिक्षक सभी बच्चों को जयघोष करें/कराएँ।

1. भारतीय संस्कृति की - जय
2. भारत माता की - जय
3. एक बनेंगे - नेक बनेंगे
4. हम बदलेंगे - युग बदलेगा
5. हम सुधरेंगे - युग सुधरेगा
6. विचार क्रांति अभियान - सफल हो, सफल हो, सफल हो
7. ज्ञान यज्ञ को लाल मशाल - सदा जलेगी, सदा जलेगी।
8. ज्ञान यज्ञ की ज्योति जलाने - हम घर-घर में जाएँगे।
9. नया सबेरा, नया उजाला - इस धरती पर लाएँगे
10. नया समाज बनाएँगे - नया जमाना लाएँगे
11. जन्म जहाँ पर - हमने पाया
12. अन्न जहाँ का - हमने खाया
13. वस्त्र जहाँ के - हमने पहने
14. ज्ञान जहाँ से - हमने पाया
15. वह है प्यारा - देश हमारा
16. देश की रक्षा कौन करेगा - हम करेंगे, हम करेंगे
17. युग निर्माण कैसे होगा - व्यक्ति के निर्माण से
18. माँ का मस्तक ऊंचा होगा -त्याग और बलिदान से
19. मानव मात्र - एक समान
20. जाति वंश सब - एक समान
21. नर और नारी - एक समान
22. नारी का सम्मान जहाँ है - संस्कृति का उत्थान वहाँ है
23. जागेगी भाई जागेगी- नारी शक्ति जागेगी
24. नशा नाश की जड़ है भाई - जिसने किया मुसीबत लाई
25. हमारी युग निर्माण योजना - सफल हो, सफल हो, सफल हो
26. हमारा युग निर्माण सत् संकल्प - पूर्ण हो, पूर्ण हो, पूर्ण हो
27. इक्कीसवीं सदी - उज्वल भविष्य
28. वंदे वेद मातरम् ।